International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(III), January - March, 2022, pp.96-103

हिन्दी उपन्यास और गाँधी–दर्शन

डॉ. सीताराम मीना*

सार

किसी भी विचारधारा एवं व्यक्तित्व का साहित्य पर प्रभाव परोक्ष और अपरोक्ष रूप से पडता है और उसको निश्चित रूप से संकेतिक करना मुश्किल कार्य होता है। महात्मा गाँधी इतने बड़े व्यक्तित्व वान नेता थे कि ऐसा कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि गौतम बुद्ध के बाद भारत में गाँधीजी ही एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनका प्रभाव भारतीय जीवन–दृष्टि, विचारधारा, संवेदना, जीवन रीतियाँ, समाज– मानस, व्यक्ति– मानस, इत्यादि पर पड़ा और यह भी कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि आज फिर से गाँधी जीवन–दर्शन महत्वपूर्ण होने लगा है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शब्दों मे, "गाँधी जी एक क्रान्तिकारी चिन्तक थे, उन्होनें राजनीति को शुद्ध बनाने के लिए मानव स्वभाव के परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गाँधी जी ने सत्य, अहिंसा द्वारा पूरे राष्ट्र को एक संगठन के रूप में एकत्रित कर लिया।"

शब्दकोश: *गाँधीवाद, हृदय परिवर्तन, सत्य, राष्ट्रीयता, अहिंसा, नारीदृष्टिकोण, दहेज, जीवन दर्शन, आत्मानुशासन।*

प्रस्तावना

सन् 1915 में गाँधी जी भारत लौटे और उन्होनें राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर तुरन्त अपना प्रभाव डालना प्रारम्भ किया था। भारतीय साहित्य भी इससे अछुता नहीं रहा। हिन्दी कविता और उपन्यास पर गाँधी जी का प्रभाव पड़ा। गाँधी जी के विचारो एवं जीवन– दृष्टि के आधार पर औपन्यासिक चरित्रों का प्रतिरूप बनाया गया, गाँधी जी के जीवन की घटनाओं का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत किया गया, गाँधी जी द्वारा पृवर्तित राष्ट्रीय आन्दोलनों का चित्ररूप दर्शन कराया गया, गाँधी जी के कुछ सिद्धान्तों की मीमांसा करने के लिए कथाओं की संरचना की गयी(उदाहरणस्वरूप हृदय– परिवर्तन, अहिंसक प्रतिरोध, सत्य का स्वरूप विवेचन, ट्रस्टीशिप की परिकल्पना, औद्योगिक विकास के दौरान बढ़ने वाली अनैतिकता, दलित पीड़ित, पतित, शोषित समाज के प्रति सहानुभूति आदि) इसमें सन्देह नहीं कि गाँधी जी ने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से, विचारों और शील से साहित्यकारों को पर्याप्त मसाला प्रदान किया।

वर्तमान परिदृश्य और गांधीदर्शन

कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। किसी भी विशिष्ट देशकाल की भौगोलिक परिस्थितियाँ, सामाजिक विचारधाराऐं, राजनीतिक उथल–पुथल आदि कही न कही उस देश काल के साहित्य को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित अवश्य करते है। यहाँ तक कि प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, भूकम्प, अकाल आदि का भी प्रभाव हमारे साहित्य पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। सम्पूर्ण–विश्व के साहित्य की आकंलन किया जाये तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि लगभग हर समुदाय, समाज, देश का साहित्य कहीं न कहीं वहाँ के सामाजिक विचारधाराओं से प्रभावित हुआ है और कुछ हद तक उस साहित्य की दिशा भी परिवर्तित हुई है। इस परिवर्तन के पीछे उस देशकाल के दार्शनिक विचारक, चिन्तक, उपदेशक, भविष्यवक्ता आदि का प्रमुख

* एसोसियट प्रोफेसर–हिन्दी, स्वं. राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादीकुई, दौसा, राजस्थान।

योगदान मिलता है। जहॉ मार्क्स, फ्रायड, डार्विन, विवेकानन्द आदि विचारको ने गत सदी मे सोचने समझने की शैली को बदल दिया, वहीं सात्र, सीमोन, गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू ने अपनी तरफ से विश्व को आधुनिक बनाने का प्रयास किया और इनकी विचारधारा से एक हद तक हमारा साहित्य भी प्रभावित हुआ है। एक प्रसंग में गाँधी जी लिखते है कि,"ईश्वर के असंख्यक नामो मे से यदि एक का चयन किया जाए तो यह सत्य ही होगा। अतः वस्तुतः सत्य ही ईश्वर है।"

महात्मा गाँधी हमारे देश के राष्ट्रपिता है और हमारे देश की आजादी की लड़ाई में उनके और उनकी विचारधाराओं का अप्रतिम योगदान रहा है। ईसा के प्रवचन कि,–"यदि कोई तुम्हें एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी आगे कर दो, अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो आप पर अत्याचार करते हो उनके बारे मे ईश्वर से प्रार्थना करो कि उनको सद्बुद्धि दे, जो तुमसे कुर्ता मांगे उसे अंगरखा भी दे दो।" इन विचारो से गाँधी जी प्रभावित थे। नमक सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलन, भारत छोड़ों आन्दोलन जैसी गतिविधियों मे देश की सोच और विचारधारा मे एक क्रान्ति बहाल की और देश में एक चेतना की लहर दौड गयी। उनके सत्य, अहिंसा, न्याय ब्रह्मचर्य, दर्शन आदि सिद्धान्तो की मीमांसा की गई और उन पर आधारित साहित्य भी रचे गये। हिन्दी साहित्य मे गाँधी विचारधारा का प्रभाव एक सर्वव्यापी प्रभाव है हिन्दी मे कदाचित ही कोई कवि या लेखक गाँधी चिन्तन के प्रभाव से अछुता रहा हो। गाँधी जी राष्ट्रीयता और संस्कृति के उन्नायक एक महापुहरूष के रूप में अवतरित होते है, इसलिए उनसे प्रभावित साहित्य की मूल प्रेरणा राष्ट्रीय और सांस्कृतिक मानी जाती है।[1]

गाँधी जी की विचारधारा का प्रभाव हिन्दी साहित्य के लगभग हर विद्या पर समान रूप से पड़ा। चाहे वह छायावादी काव्य हो या प्रेमचन्द युगीन कहानियाँ और नाटक या फिर प्रमुख ऐतिहासिक और सामाजिक कालजयी उपन्यास, सभी गाँधी रंग मे रंगे दिखाई पड़ते है। इस संबंध मे डॉ. नगेन्द्र का कहना है, "गाँधी दर्शन हमारा युग– दर्शन है और इसके सर्वव्यापी प्रभाव से आधुनिक कवि अछुते नही रहे है।" वर्तमान परिस्थितियों मे विश्व अणुशक्ति की संहारक छाया में कांपता हुआ जी रहा है। पारस्परिक संशय, भय और शंका किसी भी बौद्धिक निर्णय को स्वीकृति देने में जबरदस्त संकोच कर रही है, उपभोक्तावाद की अप–संस्कृति सम्मोहक मायाजाल में समूचे विश्व को फॅसाकर निगलने को तैयार हो रही है, अपनी जरूरतों को संयत करने मे मनुष्य नाकामयाब हो रहा है, राजनीति सत्ता केन्द्रित होकर भ्रष्टाचार और अपराधीकरण से सड़ रही है, एन्द्रिय भोग पर रोक लगाना मुश्किल होता जा रहा है, बड़े–बड़े उद्योग और मशीनीकरण प्रकृति को भस्म कर पर्यावरण की समस्याऐ पैदा कर रहे है, समृद्धि पर मुट्ठीभर लोगो का नियन्त्रण जन–जीवन को विकृत कर रहा है, मनुष्य की आत्मा और उसके व्यवहार के बीच दरार बढ़ती जा रही है और मनुष्य भयावह छदम का सहारा ले रहा है। ये स्थितियॉ स्पष्ट कर चुकी है कि दुनिया के लिए गाँधी माार्ग ही एक विकल्प है। गाँधी जी के इस विराट व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी प्रभाव को व्यक्त करते हुऐ फूलचन्द पांडेय ने लिखा है कि– "सचमुच गाँधीवह पारस पत्थर है, जिसे छूकर न जाने कितने ही हाड़ मॉस के पुतले स्वर्ण शक्ति पा सकेंगे। उसने नव– समाज के लिए आदर्श जीवन बताया। साहित्य में एक जागरण की शक्ति दी, राजनीति में विश्वनीति का रूप स्थिर किया, समाज को उदार बनाया, व्यक्ति को सचेत किया तथा समष्टि को उन्मुख तथा प्रगति पथ की ओर बढ़ाया।"[2]अतः गाँधी जी का व्यक्तित्व, विचारधारा, जीवन दृष्टि और कृतित्व पर अधिकाधिक विचार आज एक जरूरत बन गयी है।

संक्षिप्त जीवन परिचय

महात्मा गाँधी के जन्म 2 अक्टूबर 1869 को ब्रिटिश भारत में गुजरात राज्य के काठियावाड़ जिले के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम करमचन्द गाँधी और माता का नाम पुतली बाई था। इनके पिता पोरबंदर के दीवान थे। पुतली बाई इनके पिता की चौथी पत्नी थी क्योंकि इनसे पहले उनकी तीन पत्नियों की प्रसव के दौरान मृत्यु हो चुकी थी। इनके भाई का नाम लक्ष्मीदास और कृष्णदास था। इनकी एक बहन थी जिसका नाम रालियाबेन था।

महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा 'सत्य के साथ में प्रयोग' में बताया है कि बाल्यकाल में उनके जीवन पर परिवार और माँ के धार्मिक वातावरण और विचारों का गहरा असर पड़ा था। 'राजा हरिश्चन्द्र' नाटक से बालक मोहनदास के मन में सत्यनिष्ठा के बीज पड़े। मोहनदास की शुरूआती पढ़ाई लिखाई स्थानीय स्कूलों में हुई। सन् 1883 में करीब 13 वर्ष की उम्र में करीब छह महीने बडी कस्तूरबा से उनका ब्याह हो गया।

विवाह के संबंध में कहा जाता है कि उस समय बाल विवाह जैसी कुप्रथा का प्रचलन था। इसी का परिणाम, गाँधी जी का विवाह कस्तूरबा के साथ तेरह वर्ष की उम्र में सम्पन्न हुआ था। गाँधी जी भारत के प्रथम मोड़ बनिया थे, जो विदेश गये थे, क्योंकि उस समय हिन्दू धर्म में विदेश यात्रा करना अधर्म माना जाता था। गाँधीजी ने लन्दन से वकालत की शिक्षा पूर्ण की। गाँधीजी ने भारत में अपना राजनीतिक जीवन की शुरूआत सत्याग्रह का प्रयोग करके किया। सन् 1917 में चम्पारन सत्याग्रह के साथ ही भारतीय राजनीति में गाँधी युग का सूत्रपात हुआ।

रचनाऐं

गाँधी जी ने अनेक पुस्तको, पत्रिकाओ की रचना की व संपादन कार्य किया। गाँधी जी की पुस्तकें है– (1) हिन्द स्वराज (2) दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह (3) सत्य के साथ मेरे प्रयोग–आत्मकथा (4) सर्वोदय (5) सत्याग्रह (6) मेरे समकालीन। समाचार पत्र है– (1) यंग इण्डिया (2) नव–जीवन (3) इण्डियन ओपनियन (4) हरिजन। गाँधी जी की विभिन्न रचनाओं का संकलन 'गाँधी वांगमय' शीर्षक से भी उपलब्ध है।

गाँधीवाद

महात्मा गाँधी के आदर्शो, विश्वासों एवं दर्शन से उद्भुत विचारों के संग्रह को 'गाँधीवाद' कहा जाता है। महात्मा गाँधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे बड़े राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेताओं में से थे। गाँधीवाद उन सभी विचारों का एक समेकित रूप है जो गाँधीजी ने जीवन पर्यन्त जिया एवं किया था। गाँधीजी के सम्बन्ध में बागड. आर. के का कहना था कि – "मेरे विचार से अबवह समय आ पहुँचा है। जब गाँधीजी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को विश्वव्यापी स्तर पर व्यवहार में लाना चाहिए। इसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए। क्योंकि जनता यह अनुभव करती है कि इसके सिवा विनाश के परित्राण की कोई आशा नहीं है।"

गाँधीवाद के बुनियादी तत्वों में से सत्य सर्वोपरि है। सत्य ही किसी भी राजनैतिक संस्था, सामाजिक संस्थान इत्यादि की धुरी होना चाहिए। सत्य, अहिंसा, मानवीय स्वतंत्रता, समानता एवं न्याय पर उनकी निष्ठा को उनकी निजी जिन्दगी के उदाहरणों से बखुबी समझाया जा सकता है। "गाँधीजी के सत्याग्रह आन्दोलन का देश के जीवन पर अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा। अनेक लेखक और कवि इसतूफान में बह गये, इसमें अग्रगण्य प्रेमचन्द थे।"[3]

गाँधीवाद में राजनीतिक और आध्यात्मिक तत्वों का समन्वय मिलता है। यही इस वाद की विशेषता है। आज संसार में जितने भी वाद प्रचलित है वह प्रायः राजनीतिक क्षेत्र में सीमित हो चुके है। आत्मा से उनका सम्बन्ध–विच्छेद होकर केवल बाहय संसार तक उनका प्रसार रह गया है।

मन की निर्मलता और ईश्वर–निष्ठा से आत्मा को शुद्ध करना गाँधीवाद की प्रथम आवश्यकता है। ऐसा करने से निःस्वार्थ बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य सच्चे अर्थो में जन–सेवा के लिए तत्पर हो जाता है। गाँधीजी का कथन था कि– "इस रावण राज में श्रंगार छोड़ दो, जब तक देश परतन्त्र है तब तक ऐश–आराम को शोकाग्नि में भस्म कर दो।"[4] गाँधीवाद में सम्प्रदायिकता के लिए कोई स्थान नहीं है। इसी समस्या को हल करने के लिए गाँधीजी ने अपने जीवन का बलिदान किया था।

हिन्दी उपन्यासों पर गाँधी दर्शन का प्रभाव

प्रेमचन्द

प्रेमचन्द के उपन्यासों पर जो राष्ट्रीय वातावरण का प्रभाव–परिलक्षित होता हैं, उसका मूल कारण तत्कालीन राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ कही जा सकती है। प्रेमचन्द के प्रथम कहानी संग्रह 'सोजेवतन(1908) की उग्रता देखकर सरकार ने उसे जब्त कर लिया था। गाँधी युग में प्रेमचन्द का राष्ट्रीय

प्रेम का स्वर अधिक प्रबल हुआ और कुछ काल तक गाँधी के जादुई व्यक्तित्व का प्रभाव प्रेमचन्द पर भी पड़े बिना न रहा।' "प्रेमचन्द सन् 1930 तक गांधीजी के जीवन दर्शन से बहुत अधिक प्रभावित थे। राजनीति के क्षेत्र में गाँधीजी के कदम जिस गति से बढ़े, प्रेमचन्द के साहित्य के क्षेत्र में बढ़े। साहित्यकार का युग पुरूष से प्रभावित होना बड़ा स्वभाविक होता है।"[5] यहाँ हिन्दी उपन्यासों पर गाँधीवाद प्रभाव से सकारात्मक पक्ष को देखना अभीष्ट है।

'रंगभूमि' में सूर के नैतिक विचार, उसका संयम, शत्रु के प्रति भी निर्दोष आत्मीयता, प्रबल आशावाद, ईश्वर में प्रगाढ़ श्रृद्धा, मृत्यु के प्रति निर्भयता, विशुद्ध भावना से परिहास, मजाक करने की खिलाड़ी वृति, दान के प्रति वितृष्णा, अपनी जमीन को गाँव के गोंओ को चरने के लिए रखने की ट्रष्टी की मानसिकता, बड़े से बडे अधिकारी के सामने निर्भय होकर बात रखने की क्षमता , जबरदस्त आत्म–विश्वास, सूर का साधन–शुद्धि कर आग्रह, मशीनीकरण का विरोध, पूँजीवादसंस्कृति की उपेक्षा, प्राचीन काल से चली आयी सामन्तवादी संस्कृति के प्रति आकर्षण आदि विचार गाँधीवाद का विचार सूचित किया करते है। सरकार और जन सेवक के विरोध में सूर की लड़ाई भी अहिंसक ढंग से चलती है। लगता है, प्रेमचन्द का यह सूर महात्मा गाँधी का ही प्रतिरूप है, परन्तु विलक्षण कल्पना शक्ति का परिचय इसके सृजन में प्रेमचन्द ने दिया है।

'**प्रेमाश्रय**' में जमीदारों और किसानों के परस्पर सम्बन्धों का और वर्गगत विशेषताओं का चित्रण प्रेमचन्द ने यथार्थ दृष्टि से किया है। परन्तु गाँधी की भाँति प्रेमचन्द ने भी विश्वास व्यक्त किया है। कि किसानों और जमींदारों के सम्बन्ध प्रेम और सहयोग पूर्ण हो सकते है। प्रेमशंकर और मायाशंकर जैसे जमींदार वर्ग के व्यक्ति किसानों की सेवा में अपने जीवन को पूर्णतया समर्पित कर सकते है।[6]प्रेमशंकर उसी का भूमि पर अधिकार मानता है जो उसे जोतते है। मायाशंकर भी 'सबै भूमि गोपाल की' ही स्वीकार करता है तथा किसान और सरकार के बीच किसी अन्य वर्ग या श्रेणी की सत्ता एवं अधिकार को वर्तमान समाज का कलंक समझता है।[7] प्रेमचन्द प्रेमाश्रय में लखनपुर गाँव में आदर्श राज्य की स्थापना करते है; जहॉ सेवा प्रेम, सत्य, अहिंसा, त्याग, शारीरिक श्रम इत्यादि की प्रतिष्ठा दिखाई गयी है। ह्रदय–परिवर्तन के सिद्धान्त को भी स्वीकार किया गया है।

'प्रेमाश्रय'में एक पात्र से कहलवाया है– इसके लिए हमें विदेशी वस्तुओं पर कर लगाना पड़ेगा। यूरोप वाले दूसरे देशों से कच्चा माल ले जाते है, जहाज का किराया दे देते है, उन्हें मजदूरों को कड़ी मजदूरी देनी पड़ती है, उस पर हिस्सेदारी का नफा भी खुब चाहिए। हमारा घरेलू शिल्प इन समस्त बाधाओं से मुक्त रहेगा।

'कायाकल्प' में मनुष्य एश्वर्य और विलास के पीछे पड़कर किस प्रकार पतित हो जाता है, इसकी चर्चा की गई है। 'कायाकल्प' के काल–चक्र में आगरा के सामप्रदायिक दंगे प्रारम्भ होते है। गाँधीवाद विचारधारा का प्रयोग करके चक्रधर उपद्रव शान्त करता है। ग्राम जगत में जमींदार के शोषण का प्राद्यान्य है। जनता इसके विरोध में उठ खड़ी होती है। इन्ही सूत्रों के साथ मुंशी वज्रधर और उनके परिवार की रोचक कथा भी लिपटी हुई है। पुराने दरबारी वज्रधर का जीवन चाटुकारिता का मूर्तमन्त रूप है। नेता बन जाने पर भी चक्रधर न जाने क्यों वैराग्य ले लेता है। इस उपन्यास की केन्द्रीय समस्या पृथ्वी पर न्याय की खोज है। उपन्यास में यत्र–तत्र ऐसे विचार सहज प्राप्त है.... ईश्वर ने ऐसी सृष्टि की रचना ही क्यों की, जहॉ इतना स्वार्थ, द्वेष और अन्याय है? क्यों ऐसी पृथ्वी नही बन सकती है जहां सभी मनुष्य सभी जातियाँ प्रेम और आनन्द के साथ संसार में रहती? वह कौनसा इंसाफ है कि कोई तो दुनिया में मजे उड़ाए, और कोई धक्के खाए?

'गबन' मे भी विलासप्रियता और शारीरिक सुख के पीछे पड़ने के भीषण पर्यवसान की ओर संकेत कर सेवा और त्यागमय जीवन की महिमा गायी गई है। यह निश्चित करना कठिन है कि इन उपन्यासों में प्रेमचन्द के खुद के कुछ विचारों का प्रभाव कितना है और उस समय के गाँधी–युग का कितना है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द के उपर्युक्त उपन्यास गाँधी–युग के विशेष अनुकूल सिद्ध होते है

'कर्मभूमि' में गाँधी कि व्यवहारिक कार्यक्रमों का गाँवों में प्रसार दिखाया गया है। सूत–कताई, बुनाई, हरिजनोद्धार, शराबबन्दी, मुर्दा जानवरों का मांस–भक्षण न करना, विभिन्न जातियों में रोटी–व्यवहार, मन्दिर–प्रवेश का आन्दोलन इत्यादि को पढ़ते समय गाँधी–युग का वातावरण साकार होता जान पड़ता है। सरकारी नौकर

सलीम एवं घोर धन–लोभी सेठ अमरकान्त का हृदय परिवर्तन और उनका सम्पत्ति–दान तथा सुखद का विलास–मार्ग को त्यागकर सेवा–मार्ग को ग्रहण करना, बूढ़ी पठानिन, नैना इत्यादि नारियों का राष्ट्र–सेवा के लिए तत्पर होना गाँधी–युगीन प्रभाव को व्यक्त करता है।

निर्मला उपन्यास में दहेज पीड़ित महिला का जीवन दर्शाया गया है। गाँधीजी स्त्री जाति की प्रगति और स्वतन्त्रता की राह में दहेज को एक बहुत बड़ा रोड़ा मानते है। गाँधीजी ने नारी उद्धार के विषय में कहा है– "जब तक हम अपने यहॉ की स्त्रियों को माँ, बहन, बेटी समझकर उनका आदर करन नहीं सीखेगें तब तक भारत का उद्धार नहीं होगा"

'निर्मला' मे अनमोल विवाह और दहेज प्रथा की दुखान्त व मार्मिक कहानी है। उपन्यास का लक्ष्य अनमोल–विवाह तथा दहेज प्रथा के बुरे प्रभाव को अंकित करता है। निर्मला के माध्यम से भारत की मध्यवर्गीय युवतियों की दयनीय हालत का चित्रण हुआ है। उपन्यास के अन्त में निर्मला की मृत्यु इस कुत्सित सामाजिक प्रथा को मिटा डालने के लिए एक भारी चुनौती है। प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में भारत की निरीह, अबला नारी को केन्द्र में रखकर उसकी अमानवीय जीवन–परिस्थितियों को उदघाटित करने का भरसक प्रयत्न किया है। नारी जीवन से सम्बन्धित समस्याओं तथा उसके दुषपरिणामों के चित्रण के मूल में प्रेमचन्द जी का मुख्य उद्देश्य यही रहा है कि विद्रोह का नारा बुलन्द करने से पहले वे उसकी स्वीकृति के लिए उपर्युक्त समाज का गठन चाहते है।

'गोदान'–विशेष ध्यान देने की बात है कि आगे चलकर यथार्थ के गहरे निरीक्षण ने इस जनवादी कलाकार की गाँधीवाद के प्रति आस्था को कुछ विचलित कर दिया मालूम होता है। और 'गोदान' में आकर वे समाजवाद की ओर कदम बढ़ाते दिखाई पड़ते है। लेकिन गाँधीवादी तत्व प्रेमचन्द के व्यक्तित्व से विलुप्त नहीं हुआ। ब्राह्मण मातादीन सिलिया चमारिन को अपनाता है, उसका हृदय परिवर्तन होता है। मालती और मेहता के संबंधों में र्निविषय प्रेम का उदभव होता है और दोनों जन–सेवा को समर्पित होते है। मालती की तितली वृति पूर्णतः समाप्त हो जाती है। यद्यपि बच्चन सिंह ने कहा है कि "गोदान' में प्रेमचन्द गाँधीवाद से मुक्त है।"

डॉ. सुनील डहाले का मत है, "भारत की लगभग सभी भाषाओं के सहित्य पर गाँधी के मानवतावादी वैचारिक चिंतन का गहरा असर हुआ है। विशेषतः हिन्दी सहित्य और साहित्यकार गाँधीदर्शन से सर्वाधिक प्रभावित हुऐ है। महात्मा गाँधी को हिन्दी के प्रति विशेष प्रेम था। इसलिए उन्होनें हिन्दी के माध्यम से समस्त भारतीयों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया था। शायद यही कारण है कि हिन्दी साहित्य और साहित्यकार उनके अधिक निकट आ गये और उन्होनें अपनी कथा, कविता, उपन्यास, नाटक आदि विधाओं में गाँधी के आदर्शो, विश्वासों एवं दर्शन को प्रसंगानारूप चित्रित किया है।"[8]

"जैनेन्द्र" गाँधीवाद से प्रभावित दूसरे लेखक है 'जैनेन्द्र'। **'परख'** में गाँधीवाद का प्रभाव 'सत्यधन' पर दिखाया गया है, परन्तु ढुलमुल वकील सत्यधन के इस प्रभाव को बाहय रूप में ग्रहण किया गया था। अतएव नारी, धन तथा प्रतिष्ठा के मोह को वह त्याग नहीं सका। इसके विपरित बिहारी का व्यक्तित्व गाँधीवादी आदर्श से अनुप्रमाणित जान पड़ता है। जैनेन्द्र सम्भवतः दिखाना चाहते थे कि गाँधीजी का आदर्श सामान्य व्यक्ति के बस की बात नहीं है, बल्कि वह बिहारी जैसे व्यक्ति के लिए ही उपयुक्त है, जिसके व्यक्तित्व का लंगर गहराई में पड़ा हुआ है। जैनेन्द्र ने गाँधीवाद के प्रभाव को सीमित क्षेत्र में ही प्रस्तुत किया। जहॉ तक राष्ट्रीय आन्दोलनों और नारी की राष्ट्रीय आकांक्षाओं का प्रश्न है, जैनेन्द्र के उपन्यासों में उसका प्रभाव विचित्र रूप से दिखाई पड़ता है।

'सुनीता' में हरिप्रसन्न और स्वयंसुनीता का देश–प्रेम तथा अन्य उपन्यासों में किया गया राष्ट्रीय समस्याओं का क्षीण उल्लेख सीधा नहीं जान पड़ता। लगता है जैनेन्द्र का यह आंतरिक चित्रण है कि गाँधीवाद विचारों के धरातल पर अपनाया जाय तो प्रसंग–विशेष में उसकी स्थिति बड़ी दयनीय हो सकती है। गाँधीवाद से अपने समूचे व्यक्तित्व को साथ मिलाना आवश्यक है। हो सकता है, स्वयं जैनेन्द्र जी के मन में भी गाँधीवाद को लेकर कुछ शंकाएँ विद्यमान हो। नन्ददुलारे वाजपेयी का कथन है कि "सुनीता' तथा बाद की रचनाओं में जैनेन्द्र ने गाँधीवाद और मनोविज्ञान का समन्वय करने का असफल प्रयास किया है।"[9]

'सुनीता' 'सुखदा' 'व्यतीत' और **'विवर्त'** में जैनेन्द्र नारी के पर–पुरूष से प्रेम करने की मनोवैज्ञानिक समस्या का समाधान गाँधीवादी दृष्टीकोण से हृदय परिवर्तन के सिद्धान्त से ढूँढने का प्रयत्न करते है। वाजपेयी जी इस सम्बन्ध में लिखते है, "ये पात्र अपनी पत्नियों को प्रत्येक दशा में पूरी छूट देते है और इस प्रणाली के द्वारा इनके हृदय–परिवर्तन की प्रतीक्षा करते है। गाँधी जी के हृदय–परिवर्तन का आदर्श राजनीतिक स्तर पर प्रतिष्ठित किया था। पारिवारिक व्यवहारों में गाँधी जी के हृदय–परिवर्तन जैसी वस्तु को स्वीकार करते थे। कदाचित जैनेन्द्र ने यह तथ्य गाँधी–दर्शन से ही ग्रहण किया है।[10]

"त्यागपत्र" की मृणाल भी समाज द्वारा दिया गया कष्ट मौन भाव से सहन करती है। नगेन्द्र इसके बारे में लिखते है, "कष्ट के कारणों से घृणा न करते हुए, कष्ट की अनिवार्यता से त्रास न खाकर, उसमें आनन्द की भावना करना अहिंसा है और अहिंसा यह सिखाती है कि अमुक्त वासना का वितरण करना ही उसकी सफलता है।"[11]जैनेन्द्र बुद्धि से दुश्मनी करते हुऐ दिखाई देते है। और उनके प्रमुख पात्र भी समस्याओं के समाधान के लिए बुद्धि पर निर्भर रहने की अपेक्षा हृदय एवं श्रद्धा में विश्वास करते जान पड़ते है। गाँधीजी बुद्धि से अधिक श्रद्धा में आस्था रखते थे। जैनेन्द्र ने उपन्यासों में बुद्धि को प्रायः तुच्छ माना है।

सियाराशरण गुप्त

जैनेन्द्र के साथ–साथ गाँधीवाद के प्रति सियारामशरण गुप्त के व्यक्तित्व में पूर्णतः तादात्म्य परिलक्षित होता है। आलोचकों ने सियारामशरण गुप्त को भी गांधी लेखक माना है। जैनेन्द्र और सियारामशरण गुप्त के जीवनादर्श एक है– पूर्ण अहिंसा की स्थिति प्राप्त कर लेना, अर्थात अपने अहं को पूर्णतया भूला देना। इस साध्य के लिए सियारामशरण गुप्त की साधना अधिक हार्दिक है, नैतिक दमन का अभ्यास उनको अधिक है और उनका अहं सचमुच काफी धुल चुका है। अहिंसा बहुत कुछ उनके व्यक्तित्व का अंग बन चुकी है।"[12] सियारामशरण गुप्त के कथा–साहित्य पर अहिंसा का पूर्ण प्रभाव देखते है।[13]

सियारामशरण गुप्त के उपन्यासों पर गाँधीवाद का बाहय प्रभाव कम है प्रस्तुत उनके व्यक्तित्व में गाँधीवाद के सिद्धान्त–पक्ष का पूर्णत पालन हुआ है। सियारामशरण गुप्त सामाजिक मान्यताओं के नीचे कुचले गये निरीह व्यक्ति के प्रति सहानुभूति दर्शाते है

'गोद' में दुर्भाग्य से प्रताडित निरीह किशोरी को कठोर दण्ड भुगतना पड़ा। शोभाराम की मानवता भाभी के वात्सल्यपूर्ण आत्मीय–भाव कर अवलम्बन पाकर जाग ही नहीं उठती, सक्रिय भी हो जाती है। वह अपने भाई के खिलाफ विद्रोह का झण्डा उठाता है। परन्तु यह विद्रोह दयाराम के हृदय–परिवर्तन के उपरान्त पारस्परिक प्रेम की प्रगाढ़ अनुभूति में बदल जाता है।

'अंतिम आकांक्षा' का नायक एक निम्न जाति का स्वामी–भक्त और सत्यनिष्ठ व्यक्ति है, जिसके हाथ से एक डाकु की हत्या हो गयी है। लेखक रामलाल के विशाल हृदय का चित्रण करने में तल्लीन हो गया है।**'नारी'** में जमुना और अजीत के निष्कलुष स्नेह भाव को चित्रित करने में लेखक सफल हुआ है। जमुना अपने पुत्र से कहती है, "सह ले इसे सह, ले। कमजोर क्यों पड़ता है? जितना ही अधिक सह सकेगा, उतना ही तुम बड़ा होगा।" इस वाक्य में गाँधी के सन्देश की ध्वनि स्पष्ट सुनाई पड़ती है।

सियारामशरण गुप्त के पात्रों में सामाजिक अन्याय के प्रति विद्रोह–भाव नहीं है, आक्रोश का भाव भी नहीं दिखाई देता; परन्तु इनकी पीड़ा दुर्बल की मोटी हाय है, जो लोहें को भी भस्म कर देती है। सियारामशरण गुप्त के कथा–साहित्य के प्रभाव के बारे में माचवे जी ने ठीक ही लिखा है, "रस की दृष्टि इनके निकट अधिक सार्थक है, वनिस्पद वृहद जिज्ञासा के। परिणामस्वरूप उनके दो उपन्यास 'देखन में छोटे लगे, घाव करत गम्भीर।"[14]

गाँधीजी का मूल मन्त्र है, मानव उपासना। सियारामशरण गुप्त जीवन–पर्यन्त इसी मानव उपासना में लगे रहे, जिनकी अभिव्यक्ति **'मौर्य–विजय' 'अनाथ' 'आद्रा' 'दूबदिल' 'आत्मोत्सर्ग'** और **'बापू'** में दिखाई देती है। सियारामशरण गुप्त को सम्बोधित करते हुऐ 'बापू' की भूमिका में श्री महादेव देसाई ने लिखा है, "आपकी गगरी का पानी पीकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आप ठीक कहते है कि बापू एक बड़ा तीर्थ है। उस तीर्थ के विपुल सलिल

से जिसकी जितनी शक्ति हो, उतना ही ले सकता है।"[15]महात्मा गाँधी गीता द्वारा प्रतिपदित इस सिद्धान्त के समर्थक थे कि हमारा साध्य ही नहीं, साधन भी निष्कलुष होना चाहिए। **'रश्मिरथी'** का कर्ण इसी सिद्धान्त का साकार रूप है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते है कि गाँधी–युग के समग्र प्रभाव को प्रेमचन्द ने अभिव्यक्ति दी, जैनेन्द्र ने पारिवारिक क्षेत्र के अन्तर्गत विशिष्ट समस्या का विश्लेषण करने में गाँधीवाद के अहिंसा, प्रेम और हृदय–परिवर्तन के सिद्धान्तों का उपयोग किया और सियारामशरण गुप्त ने गाँधी के सिद्धान्तों को अपने व्यक्तित्व में पूर्णतः आत्मसात कर राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों से अलग (यथा–संभव) कर गाँधी के सैद्धान्तिक पक्ष को कतिपय पात्रों के माध्यम से मूर्त करने का प्रयत्न किया।

महात्मा गाँधी का कथन है कि 'समाज के वंचित–मुंचित, दलित, शोषित, दरिद्रनारायण की सेवा करो। फलस्वरूप कई काव्य और उपन्यास अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों पर लिखे गये। सन् 1920 से लेकर 1940 के बीच पचासों उपन्यास इस दिशा में अग्रसर हुऐ। मैथिलीकरण गुप्त के **'किसान'** और **'अछूत' खण्डकाव्य,** रविन्द्रनाथ टैगोर की **'चांडालिका'** शरतचन्द्र चटर्जी का **'पल्ली समाज'** इस कोटि के है। गाँधीजी ने सेवा, संयम एवं अहिंसा का जो पाठ पढ़ाया था, उसी तथ्य पर आधारित व्यंग्य नाटक **'बकरी'** सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का है। नरेन्द्र कोहली का **'शंबूक की हत्या'** भी इसी कोटि का है। हिन्दी साहित्यकारों के साथ–साथ, दक्षिण भारत के साहित्यकारों में भी गाँधीजी के भाषण का अद्वितीय प्रभाव रहा। गाँधीजी का कहना था, 'गांवों की ओर चलो। विकेन्द्रीकरण के इस नारे का ही प्रभाव था कि हिन्दी में 'देहाती दुनिया' 'गोदान' और 'मैला आंचल' तक ग्राम और ग्रामीण जीवन, कहानियों और उपन्यासों का विषय बना। महात्मा गाँधी के सिद्धान्तों का प्रभाव केवल राष्ट्रीय आन्दोलनों पर ही नहीं, विश्व शांति के लिए अहिंसा का प्रेरणा देने में भी था।

आलोचको की आग में तपकर आज महात्मा गाँधी के सिद्धान्त तथा उनकी नीतियाँ और प्रखर साबित हो रही है। महात्मा गाँधी के विषय में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइस्टाइन ने कहा था कि आने वाली पीढ़ियाँ मुश्किल से यह विश्वास कर सकेगी कि हमारे बीच हाड–मांस का ऐसा चलता–फिरता आदमी पैदा हुआ था। आने वाली पीढ़ियों को यह विश्वास जीवित रखने का उत्तरदायित्व हमारे देश के प्रबुद्ध कवियों और लेखको का है, जो अपनी रचनाओं के माध्यम से यह कार्य बखुबी कर सकते है। माखन लाल–चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, सियारामशरण गुप्त, बालकृष्ण भट्ट, सुभद्राकुमारी चौहान, सुर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पन्त आदि की कविताओं में तथा प्रेमचन्द, जैनेन्द कुमार, विष्णु प्रभाकर आदि के उपन्यासों, कहानियों और नाटको में गाँधीवाद की सर्वाधिक छाप मिलती है। महात्मा गाँधी ने विश्व–बन्धुत्व, लोक मंगल की विचारधारा को अपना कर साम्यभाव को महत्व दिया।

गाँधीजी की हत्या के बाद उनके प्रेम शिष्य नैहरू जी के नेतृत्व में भारत आर्थिक प्रगति की राह पर चलने लगा। बढ़ती उद्योग व्यवस्था और मशीनीकरण ने आंशिक रूप से बाहय सभ्यता को लेकर प्रगति अवश्य की, परन्तु भारत की आत्मा को धुन लग गया। आंतरिक आत्मानुशासन, श्रेष्ठ मुल्यों के प्रति समर्पित भावना, सादगी और सरल जीवन के प्रति रूझान, ट्रष्टी की महत्त्वपूर्ण भूमिका, शोषण, हिंसा और असत्य के प्रति वितृष्णा, भोगवाद की अंधी दौड़ के प्रति सजगतापूर्वक विरोध भावना, अंत शुद्धि पर बल इत्यादि गाँधीवादी मूल्यों के प्रति हमारी राजनीति ने और समाज–गति ने भयावह उपेक्षा–भाव बरता है। सत्ता और सत्याग्रह के समन्वय पर हमने कभी गंभीरतापूर्वक विचार नहीं किया। परिणामस्वरूप हमारे समाज में शोषण और हिंसा अनेक रूपों में बढ़ रही है, समाज के विभिन्न वर्गो मे दरारें पैदा हो गई है। शिक्षा व्यवस्था समाज के छोटे–सम्पन्न वर्गो के स्वार्थ की रक्षा में लगी हुई है। हमारे जीवन में छद्म फैल गया है। यह पक्षाघात की स्थिति है, क्योकि हमने अर्थ के पीछे, आत्मा की उपेक्षा की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिद्धेश्वर प्रकाश – 'छायावादोत्तर काव्य– पृष्ठ–68
2. आधुनिक कवि पन्त (प्रथम संस्करण)– पृष्ठ–144

3. प्रकाश चन्द गुप्त – नया हिन्दी साहित्य– एक भूमिका, संस्करण चतुर्थ, पृष्ठ–15
4. महात्मा गाँधी, कर्मवीर, 4 दिसम्बर 1920
5. दीक्षित डॉ. त्रिलोकीनारायण – प्रेमचन्द' पृष्ठ–85
6. 'प्रेमाश्रय'– पृष्ठ–142
7. 'प्रेमाश्रय'– पृष्ठ–382
8. डॉ. सुनील डहाले – गाँधी विचारधारा का हिन्दी कथात्मक साहित्य पर प्रभाव–पैठछ.2395.2873
9. नन्ददुलारे वाजपेयी – नया साहित्यः नये प्रश्न– पृष्ठ–194
10. नन्ददुलारे वाजपेयी – नया साहित्यः नये प्रश्न– पृष्ठ–198
11. डॉ. नगेन्द्र – विचार और अनुभूति– पृष्ठ–139
12. डॉ. नगेन्द्र– विचार और अनुभूति– पृष्ठ–141
13. देवराज उपाध्याय – सियारामशरण गुप्त– पृष्ठ–106
14. प्रभाकर माचवे – सन्तुलन– पृष्ठ–173
15. सियारामशरण गुप्त – बापू– पृष्ठ–5

❖◆❖